Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 5, May - 2026

DOIs:10.2018/SS/202605004 --:-- Research Paper / Article / Review

"कम्बिलिकंटत्ते कलभरणीकल" आत्मकथा में अभिव्यक्त जीवन संघर्ष

डॉ. सांटी जोसफ

सह आचार्या , हिंदी विभाग , संत अलोशियस महाविद्यालय , एडत्वा , अलप्पुषा , केरल।

E-mail : santyjoseph@aloysiuscollege.ac.in

सारांश : यह एक ऐसी आत्मकथा है जो हर बार पढ़ने पर पाठक की आंखों को नम कर देती है। जीवन की अत्यंत कठिन परिस्थितियों से लड़कर हासिल की गयी जीत! जीवन के वे संघर्ष जिन्हें एक साधारण मनुष्य के लिए सह पाना मुमकिन नहीं। भले ही वे कई बार गिरे ,लेकिन माँ का सुकून उन्हें आगे जीने के लिए प्रेरित करता हैं। इस आत्मकथा में जीवन के कठिन संकटों का वास्तविक चित्रण मिलता है। साथ ही ,इसमें उन लोगों की यौन विकृतियों को भी दर्शाया गया है जो खुद को उच्च और सभ्य होने का ढोंग करते हैं। मनुष्य का जीवन एक कहानी की तरह है। मानव जीवन एक अनूठा संगम है। इसमें दुःख , संघर्ष और असफलता की कड़वाहट है, तो सुख, विजय, गर्व और शांति की मिठास भी ,अंतर बस इतना है कि हर व्यक्ति के जीवन में इनकी मात्र कम या अधिक होती है।

मुख्य शब्द : कृषि ऋण, कठिन समय, आत्महत्या, मासूम मुस्कान, कड़ी मेहनत, आत्मविश्वास , विजय ।

लेखक परिचय : " कम्बिलिकंटत्ते कलभरणीकल " बाबू अब्राहम द्वारा लिखी गई मलयालम की एक आत्मकथा है।इस पुस्तक के प्रकाशित होने के 6 महीने के भीतर ही इसका 60-वां संस्करण प्रकाशित हो गया। लेखक का जन्म 1974 अप्रैल में केरल के पहाड़ी जिले इडुक्की के कम्बिलिकंटम नामक एक छोटे से गांव में हुआ था। नंदीकुन्नेल मैरी और अब्राहम उनके माता -पिता हैं। लेखक 1999 से फ्रांस में स्थायी रूप से रह रहे हैं। उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया केंद्रीय विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में रैंक के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने फ्रांस से फ्रेंच भाषा में मास्टर डिग्री और मनोविज्ञान में एम्. फिल. और पि .एचडी. पूरी की। साल 2003 से वे फ्रांस में एक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वर्तमान में ,वे फ्रांस में प्रबंधन विभाग में सह आचार्य और समाज शास्त्र के शोधकर्ता के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं।

कथानक का सारांश : केरल के मलबार और हैरेंज के प्रवासी वे लोग थे ,जिन्होंने जंगलों ,जंगली जानवरों और मलेरिया जैसी बीमारियों से लड़कर अपने जीवन को संवारा और अपनी जगह बनाई। 1950 के दशक की शुरुआत में ,एक नए जीवन का सपना लेकर *कोट्टयम और *तोडुपुषा से कई लोग इडुक्की जिले के पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में आकर बस गए । मिटटी ,मलेरिया और भूख से संघर्ष करते हुए ,इन लोगों ने जंगलों को साफ किया और खेती शुरू की। वे अपने दृढ़ संकल्प से एक बेहतर जीवन बनाने के लिए पूरी तरह समर्पित थे।1965 तक वहां थोड़ा और विकास हो चुका था इडुक्की जिले के पारथोडु और कम्बिलिकंटम जैसे इलाकों में जीप चलने लायक सड़कें ,छोटे पूजा स्थल और शराब की दुकानें शुरू हो गयी थी। बाबू अब्राहम की तीन बहनें हैं। सबसे बड़ी बहन लाली है ,दूसरी जेस्सी है और बाबू का जन्म तीसरे स्थान पर हुआ था। सबसे छोटी बहन का नाम बिंदु है। पहले दो बच्चे लड़कियां होने के कारण पति और सास ने मैरी को बहुत दोषी ठहराया और उन्हें कभी भला -बूरा कहा।

पिता शराब पीकर घर आते ,गाली गलौज करते और माँ को प्रताड़ित करते थे। बच्चों को उस हिंसा और तकलीफ से बचाने के लिए ,माँ ने पुराने कपड़ों और अन्य चीज़ों को फैलाकर घर के बाहर एक गुप्त ठिकाना तैयार किया था। जैसे ही माँ पिता को आते हुए देखती ,वह तुरंत बच्चों को वहां छुपा देती थी। जल्द ही अमीर बनने की चाह में ,कथाकार के पिता दोपहर तक खेत में काम करने के बाद शहर में ताश खेलने चले जाते थे। उसी समय माँ पड़ोस के घरों में दिहाड़ी मजदूरी करने जाती थीं। वहां से

मजदूरी के रूप में मिलनेवाले धान और चावल से माँ घर की भूखमरी दूर करने की कोशिश करती थीं। स्वाभिमानी पिता को यह बिलकुल पसंद नहीं था। लेकिन भूख के कारण बच्चे परेशान न हों,इसलिए माँ मजदूरी पर जाती रही। पिता ने सहकारी बैंक से कृषि ऋण लिया था। उसे चुका न पाने के कारण जब उन्हें पता चला कि बैंक अधिकारी कुरक्की के लिए आ रहे हैं ,तो पिता डरकर मलबार भाग गये। पति के बिना अपने चार बच्चों को लेकर क्या करना है ,यह न जानकर मैरी बहुत परेशान थी। न तो पति के परिवार से और न ही अपने घरवालों से क़ोई मदद मिली ,तो उसने अपने चारों बच्चों के साथ बाँध में कूदकर आत्महत्या करने का फैसला किया। रात में वह बच्चों को लेकर बाँध की ओर निकल तो पड़ी ,लेकिन बच्चों की मासूम मुस्कान ने माँ को आत्महत्या करने से रोक दिया। बच्चों पर विश्वास रखकर किसी भी तरह जीवन में आगे बढ़ने का निर्णय उस माँ ने लिया। आगे का सफर बहुत कठिन था।" पिता नहीं है " कहकर दोस्तों का चिढ़ाना लेखक के मन को झकझोर देने वाला था।

अपनी चार संतानों को भोजन ,वस्त्र , सुरक्षित आवास और शिक्षा प्रदान करने के लिए अपनी दिहाड़ी मजदूरी को अपर्याप्त पाकर माँ ने बाबू ,लाली और बिंदु को त्रिशूर के एक अनाथालय में भर्ती कर दिया। उस समय बाबू की उम्र आठ वर्ष थी। वहां का जीवन अत्यधिक कठिनाईयों से भरा था। एक बार छोटी बहन बिंदु प्रार्थनालय गयी थी और वहां कुछ देर और प्रार्थना करने के लिए रुक गयी। अनाथालय के अन्य बच्चे तो वापस आ गए ,लेकिन बिंदु उनके साथ नहीं थी। दुःख के कारण ज़ोर -ज़ोर से रोने पर ,बाबू और उसकी दूसरी बहन लाली को अनाथालय की मालकिन ने छड़ी से बहुत पीटा। उस साल क्रिसमस की छुट्टियों में जब माँ आई ,तो उन्होंने अपने बच्चों के दुःख और कष्ट को समझा और अगले ही दिन स्कूल से बच्चों की टी. सी. लेकर उन्हें वापस घर ले गयी। बाबू और उसकी बहनें फिर से स्कूल जाने लगे। उन्होंने स्कूल में अच्छे अंकों के साथ परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। पड़ोसियों और कक्षा के प्रसन्नन और ज़ुबैदा जैसे बच्चों ने बाबू की मदद की। शिक्षक , शरारत करने पर अक्सर उन्हें डांटते और सज़ा देते थे ,लेकिन जब उन्हें यह समझ आया कि वह पढ़ाई में होनहार बच्चा है ,तो उन्होंने किताबें और अन्य सामान खरीदकर उसकी मदद की। पडोसी भी गरीब थे ,फिर भी वे कभी -कभी बाबू को भोजन और अन्य चीजें देते थे।

आगे माँ और बच्चों ने मिलकर कड़ी मेहनत की। उन्होंने घर की थोड़ी मरम्मत करवाई और उसे बेहतर बनाया। दो भैंसें खरीदकर उन्होंने दूध बेचना शुरू किया। इसके साथ ही माँ ने धीरे -धीरे ठेके पर काम लेना भी शुरू कर दिया। छुट्टियों के दौरान बाबू भी माँ के साथ काम पर जाकर उनकी मदद करने लगा। माँ के भाई और उनकी विवाहित बहन और बहनोई कभी -कभी बाबू को अपने घर ले जाते थे और उसे अच्छा भोजन और सुख -सुविधायें देते थे। किशोरावस्था में पहुंचते ही बाबू का स्वाभाव बदलने लगा। दूसरों द्वारा ' बिना पिता का ' कहना उसके लिए असहनीय होता जा रहा था। उसके मन में इस पूरी दुनिया के प्रति नफ़रत और बदले की भावना भर गयी। दसवीं कक्षा में पहुंचते -पहुंचते पिता के प्रति उसकी नफ़रत दोगुनी हो गयी। स्कूल जाने से बचने के लिए वह बेहोश होने का नाटक करने लगा। उसने उन शिक्षकों को भी भला -बुरा कहा जिन्होंने उसकी गलतियों पर उसे टोका था। एक शुक्रवार को जब उसने फिर से बेहोशी का नाटक किया और स्कूल नहीं गया ,तो माँ का दिल पूरी तरह टूट गया। ऐसा लगा जैसे उनकी सारी उम्मीदें ख़त्म हो गयी हों । माँ के बुलावे पर उनके छोटे भाई और मामी बाबू के घर आए। आमतौर पर जब माँ के भाई आते थे ,तो घर में कुछ अच्छा पकवान बनाया जाता था ,लेकिन उस दिन घर में सन्नाटा पसरा हुआ था। माँ ने निराश में कहा "बच्चों मैं थक गयी हूं । मैं पूरी तरह टूट चुकी हूं " 1 ये माँ के दिल को छलनी कर देनेवाले शब्द थे ,जिन्होंने कभी यह उम्मीद की थी कि बेटा बड़ा होगा तो ये सारी मुश्किलें ख़त्म ही जाएगी। माँ का दुःख देखकर छोटे मामा लाठी लेकर बाबू को पीटने के लिए आगे बढ़े। नफ़रत और हताशा के कारण बाबू पागलों की तरह चिल्ला उठा " मुझे छूना मत। तुम सब इतने सालों तक कहां थे ? "2 यह सुनकर माँ और मामा दंग रह गए। हालाँकि मामी ने प्यार से बाबू को गले लगाकर उसे शांत करने की कोशिश की ,लेकिन बाबू नहीं माना। अगले हफ्ते भी जब उसने बेहोश होने का नाटक किया और स्कूल नहीं गया ,तब मामा और माँ ने मिलकर उसे प्यार से समझाया।। जब वह शांत हुआ ,तो बाबू मामा के साथ रहकर अपनी दसवीं की पढ़ाई पूरी करने के लिए राजी हो गया।

मार्च के महीने में ,दसवीं की परीक्षा के बाद ,वह अपने द्वारा लिखे गए पहले दो उपन्यासों के साथ कोट्टयम की और चल पड़ा। गाडी में उसकी मुलाकात अशरफ नाम के एक व्यक्ति से हुई थी। अशरफ ने उसे यह कहकर बहलाया -फुसलाया कि बंगलुरु में उसका बड़ा कारोबार है और वह उसे नौकरी दिला देगा। वह उसे *मूवाट्टुपुषा ले गया ,जहां एक होटल में उसने उसके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार करने की कोशिश की। वहां से किसी तरह भागकर वह कोट्टयम पहुंचा ,जहां उसने कई होटलों में काम किया। किंतु हर जगह उसे केवल कठिनाईयों का ही सामना करना पड़ा। अंततः निराश होकर वह अपनी माँ के पास लौट आया। 'उसके मन में यह संशय था कि माँ उसे स्वीकार करेगी या नहीं ,लेकिन अपने खोए हुए बेटे को वापस पाकर माँ ने उसे गले लगा लिया और बहुत प्यार दिया ;हालाँकि माँ की पहली प्रतिक्रिया एक जोरदार थप्पड़ थी।' 3

माँ के साथ काम पर जाने के कुछ दिनों बाद , एक रविवार को ,लेखक के पिता के दो भाई और एक शारीरिक रूप से जर्जर व्यक्ति घर आए। लेखक की बहन ने बताया कि वह व्यक्ति उनके पिता हैं ,जो बारह साल पहले उन्हें छोटकर चले गए थे। लेखक उन्हें पिता के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं था। माँ ने अपने पति को वापस स्वीकार करने के लिए कुछ कड़ी शर्तें रखी। वे अपनी मजदूरी का काम जारी रखेगी और पति अब शराब पीकर उनके साथ गाली -गलौज या मारपीट नहीं करेगा। '' मुझे अपने पति को स्वीकार करने में कोइ आपत्ति नहीं है। लेकिन पिछले बारह वर्षों से मैं ने हर अपमान सहकर बहुत कठिनाईयों के साथ इन बच्चों को पाला है। इसलिए, मैं आगे भी काम पर (मजदूरी करने)जाती रहूँगी। अब से शाराब पीकर आकर मुझे गाली देना या मारना -पीटना नहीं चलेगा। अगर यह मंजूर है ,तो ही घर के अंदर कदम रखना। "4 बारह वर्षों के अपमान की यादों के कारण,बाबू ने अपने पिता को स्वीकार करने के प्रति अपना विरोध माँ के सामने जाहिर किया। इस पर माँ ने भावुक होकर अपने बच्चों को गले लगाया और कहा कि पिता जैसे भी हों ,उनके लिए वे सूंदर हैं क्योंकि उन्हीं की वजह से उन्हें ये चार बच्चे मिले। माँ ने स्पष्ट कर दिया कि यदि बच्चों को पिता का घर में रहना पसंद नहीं है ,तो वे जा सकते हैं। अंत में माँ की बात सुनकर बच्चे निरुत्तर हो गए। " माँ ने अपने चारों बच्चों को गले लगाया और कहा -बच्चों पिता जैसे भी हों ,मेरे लिए तो वो सुन्दर ही हैं। मुझे तुम चारों बच्चे मिले क्योंकि ये पिता सात थे ,इसलिए अगर मेरा उन्हें घर में रखना तुम्हें पसंद नहीं है ,तो तुम जा सकते हो। " 5 जब किसी ने कोई जवाब नहीं दिया ,तो माँ ने आगे कहा -" वह तुम्हारे पिता हैं। इससे पहले उन्होंने क्या किया ,वह सब भूल जाओ। रही बात रूप और सुंदरता की ,तो उन चीजों का कोई महत्व नहीं है । " 6 माँ का विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। धीरे -धीरे ,शाम की वही पुरानी हँसी -मज़ाक और खुशियां घर में वापस लौट आई।

पिताजी के वापस लौटने के बाद ,सबने मिलकर कड़ी मेहनत की । इसी बीच ,बड़ी बहन अपनी मर्जी से कान्वेंट में शामिल हो गयी। बाद में ,कथाकार ने सन्यास का मार्ग चुना। हालाँकि ,जब वह छुटियों में घर आया ,तो कथाकार ने देखा कि उनके पिता ने फिर से शराब पीना और माँ को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया है। यह देखकर उन्होंने सन्यासी जीवन त्याग दिया और घर लौट आए। इसके बाद उन्होंने पास के एक कॉलेज से प्री डिग्री की पढ़ाई की और विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस पूरी यात्रा के दौरान ,उन्हें समाज के उच्च वर्ग और अधिकारियों से बहुत अपमान और उपेक्षा सहनी पड़ी। लेकिन इन कठिन समय में हमेशा किसी न किसी ने उन्हें सहारा दिया और उनकी मदद की।

बाबू ने केरल से बी ए करने के बाद जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त की। इस दौरान उन्हें सामाजिक उपेक्षा और माँ के कैंसर जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। माँ के इलाज के लिए पैसों की कमी के कारण ,उन्होंने फ्रांस दूतावास के एक शोध प्रोजेक्ट के लिए आवेदन किया ,जिस के लिए वे तकनीकी रूप से अनुभवी नहीं थे। इंटरव्यू बोर्ड के सदस्यों ने उसे कोइ खास समर्थन नहीं दिया ,लेकिन बोर्ड में मौजूद मेरी फ्रांस गोनर्द नामक एक फ्रांसीसी महिला, बाबू की बात सुनने के लिए तैयार हो गयी। इंटरव्यू के दौरान ,उन्होंने अपने आत्मविश्वास और सच्चाई से चयन समिति को प्रभावित किया। उन्होंने तर्क दिया कि अवसर के बिना अनुभव मिलना असंभव है और उन्होंने यहां तक कह दिया कि यदि काम पसंद न आए तो उन्हें पैसे न दिए जाएं। बाबू ने कहा " अगर कोइ मुझे मौका ही नहीं देगा ,तो मुझे अनुभव कैसे मिलेगा ? मैं ने अपनी माँ के इलाज के लिए पैसे जुटाने के उदेश्य से ही इस प्रोजेक्ट के लिए आवेदन किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं फ्रांस जाकर इस काम को बखूबी पूरा करूंगा और आपको एक बेहतरीन रिपोर्ट सौपूँगा। आप मुझे बस डॉलर और विमान का टिकट दीजिये। अगर मेरे वापस आने पर आप मेरी रिपोर्ट से संतुष्ट नहीं हुए ,तो मुझे एक भी पैसा मत दीजिएगा। तब आप किसी अनुभवी व्यक्ति को इस शोध के लिए फिर से फ्रांस भेज सकते हैं आप ऐसा जोखिम उठाने से क्यों कतरा रहे हैं ? '' 7 उनकी बातों से प्रभावित होकर फ्रांसीसी अधिकारी मैरी फ्रांस गोनर्द ने उन्हें चुन लिया। यह उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। बाकि सारी औपचारिकताएं और प्रक्रियाएं पूरी करने के बाद बाबू अपने गांव लौट आया। उसने अपनी माँ के साथ तीन दिन बिताये और फिर वापस दिल्ली पहुँच गया। अगले ही दिन वह फ्रांस के लिए विमान में सवार हो गया।

फ्रांस पहुंचने पर लेखक कोवहां से मिली कोलेट मैडम का अटूट साथ मिला। जीवन की यात्रा में लेखक को कई चेहरे मिले और अच्छे -बुरे कई अनुभव भी हुए। उन्होंने अपने काटवे अनुभवों को कमजोरी बनाने के बजाय उनसे ऊर्जा और प्रेरणा पाकर जीवन में एक ऊंचा मुकाम हासिल किया। लेखक की माँ उनकी सबसे बड़ी ताकत थीं। कथाकार बाबू को राह दिखानेवाली माँ के बोल :- " यदि तुम अपने चारो ओर पानी बढ़ता हुआ देखो ,तो यह जानते हुए भी कि तुम्हें तैरना नहीं आता, घबराकर चीखना -चिल्लाना मत। उस पानी के बहाव में यहाँ -वहाँ तैरते हुए लकड़ी के टुकड़ों को पकड़कर ऊपर चढ़ जाओ ओर पानी पर बस तैरते रहो। फिर लहरों के साथ बहती हुई टहनियों को जंगली लताओं से जोड़कर एक बेड़ा बनाओ। चप्पू चलाते समय तुम्हारे मन में उस खुशी का अहसास होना चाहिए जो किनारे पर पहुंचने पर मिलेगी। जब तुम किनारे पहुँच जाओ। तो उस बड़े को वापस पानी में

धकेल देना ताकि वह किसी ओर के काम आ सके। जब कोई डूबता हुआ व्यक्ति उस बड़े के सहारे सुरक्षित किनारे पहुँचेगा ,तब तुम्हारे भीतर जो निस्वार्थ आनंद पैदा होगा वही तुम्हें जीवन भर रह दिखाना चाहिए।" 8

निष्कर्ष :

लेखक बाबू अब्राहम का बचपन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा। घर की गरीबी और दोस्तों के ताने-बाने उन्हें गहरा दुःख दिया। माता - पिता के जीवित होते हुए भी ,कम उम्र में ही उन्हें अनाथालय जाना पड़ा। वहां भूख और अपमान के बीच उनके जीवन बीता ,जो किसी की भी आँखें नम कर दे। शाम को मिलनेवाले मांस के शोरबे ( ) की उम्मीद में उन्हें अनाथालय का कचरा और गन्दगी तक ढोनी पड़ती थी। इन सबके बावजूद ,उनके मन में एक बड़ा इंसान बनने की प्रबल इच्छा थी। उन्हें पूरा विश्वास था कि अच्छी शिक्षा से ही वे जीवन की इन मुश्किलों से बाहर निकल पाएंगे। इसलिए तमाम परेशनियों के बीच भी बाबू ने पूरी लगन और निष्ठा से अपनी पढ़ाई जारी रखी । इस आत्मकथा की एक और महत्वपूर्ण पात्र लेखक की माँ हैं।माँ अपने बच्चों पर भरोसा करती है । वह उनके जीवन को संवारने के लिए अनगिनत कष्ट सहती है और उन्हें हमेशा अपने आँचल से समेटे रखती है। यह एक माँ के दीप्तिमान बलिदान की मर्मस्पर्शी कथा है। चाहे कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़े ,यदि हम अपने लक्ष्य को पाने और जीवन में सफल होने का संकल्प कर लें ,तो विजय हमारे साथ होगी। यदि हम अपने इस निर्णय पर अडिग रहें ,तो कितनी भी बड़ी बाधा क्यों न आये ,उसे पार करने का आत्मविश्वास स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। संकट के समय में हमारी सहायता करने और मानसिक सम्बल देने के लिए कोई न कोई अवश्य आता है।

सन्दर्भ :

1.बाबू अब्राहम , कम्बिलिकंटत्ते कलभरणीकल , अगस्त 2025 ,मातृभूमि बुक्स ,कोषिकोडु ,केरल. पृष्ठ 123

2.वही ,पृष्ठ 124

3.वही ,पृष्ठ 142

4 वही ,पृष्ठ 150

5. वही ,पृष्ठ 151

6. वही ,पृष्ठ 151

7.वही ,पृष्ठ 190-191

8.वही ,पृष्ठ145

*कम्बिलिकंटम - केरल का एक स्थान का नाम

* कलभरणीकल - एक प्रतीक के रूप में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह बाइबिल से सम्बंधित है। येसु मसीहा ने अपनी पहली आश्चर्यजनक घटना उस समय की ,जब उन्होंने अपनी माता मैरी के अनुरोध पर एक विवाह समारोह में घरवालों को अपमान से बचने के लिए बर्तनों को वाइन से भर दिया था।

*कोट्टयम -केरल का एक ज़िला है।

*तोडुपुषा - केरल का एक स्थान का नाम ।

*मूवाट्टुपुषा - केरल का एक स्थान का नाम ।